BA II MIL — हिन्दी विभाग — डॉ. गीता कुमारी — 5-10-2020 — 2:00-3 pm

मुक्तिधन कहानी का सारांश

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी द्वारा रचित मुक्तिधन कहानी उनकी यथार्थवादी कहानी है। प्रेमचन्द द्वारा यह कहानी तब लिखी गई थी जब भारत परतंत्र था। और भारतीय संविधान अस्तित्व में नहीं था इसलिए उनकी सोच के अनुरूप कानून का पालन का तो सवाल ही नहीं उठता।

मुक्तिधन कहानी एक गाय के इर्द-गिर्द घूमती है। इसमें नैतिकता के धरातल पर व्यक्ति की परीक्षा के माध्यम से मन पक्ष का व्यक्तिगत स्वरूप उभरता है। यह कहानी लेन देन यानी ब्याज का धंधा करने वाले दाऊदयाल और एक गाय - ~~बछड़े~~ बछड़े के मालिक व दाऊदयाल कहानी रहमान की ही से जोड़ित है। दाऊदयाल एक तरफ तो बहुत बड़े सूदखोर है, क्योंकि वे 25-30 रुपये सैकड़ों की दर से ब्याज पर कर्ज देते हैं और तय मियाद को नहीं चुकाने पर कागज़ों का भी इस्तेमाल करते हैं। इसके बाद कचहरी में मुकदमा चलाने की धमकी भी देता है। यह बात तो उनकी स्वभाव की हुई जो उन्हें निष्ठुर कहलाती है। वहीं दूसरे पात्र हैं रहमान, जो धर्म से मुसलमान है और पेशे से ग्वाला है। उन की जरूरत उन्हें अपनी प्रिय दुधारू गाय बेचने को विवश कर देती है। लेकिन रहमान

की अनुभवी आँखे ऐसे खरीदार की खोज में है, जो गाय को पाल और सेवा कर। इसी समय एक दयामोहिनी - रूपा गाय के निकट से गुजरते है और उनका मन ललचा जाता है। कुछ लोग 40 रूपये में गाय खरीदने के लिए तैयार है मगर रहमान नहीं बेचता। दके से मोल - भाव के बाद 35 रूपए में सौदा तय हो जाता है। सौदे का लेन देन हो जाने के बाद रहमान यह राज खोलता है। कि वह सस्त में गाय क्यों बेची इसका रहस्य उजागर करता हुआ। कहता है हुजूर आप हिन्दू है, इसे लेकर आप पालेंगे, इसकी सेवा करेंगे। ये सब कसाई है इनके हाथ तो मैं 50 रूपये में भी कभी न बेचता आप बड़े मौके से आ गए, नहीं तो ये सब जबरदस्ती गऊ छीन ले जाते। बड़ी मुसीबत में हूँ सरकार, तब यह गाय बेचने निकला हूँ नहीं तो इस घर की लक्ष्मी को कभी नहीं बेचता इसे बड़ी जतन से पाला पोसा है। कसाईयों के हाथ कैसे बेच देता दाऊ का रहमान की बात सुनकर चकित होना स्वभाविक था क्योंकि उन्होंने गाय के सौदे में इतना ज्यादा खाना तिलकधारी महात्माओं में भी नहीं देखा था।

रहमान की बूढ़ी माँ मरने से पहले हज यात्रा करना चाहती है। मातृ भक्ति से सराबोर। लाचार माँ की इच्छा को कैसे टाले सो 200 रूपये में

कर्ज दाऊ से ही ले लेता है। इज से लौटते ही माँ की मृत्यु हो जाती है। जब मृत आत्मा को शांति के लिए कब्र बनवानी जरूरी थी, फिर रहमान सकुचाता दाऊ की चौखट पर आ खड़ा हुआ। दाऊ कृपा करते हैं। और 200 रुपए फिर दे देते हैं। रहमान का ब्याज समेत 700 रुपये हो जाता है। इन सब झंझटों से मुक्त हुए रहमान की उम्मीद तब जगी जब खेत में गन्ने की अच्छी फसल लहलहा गई लेकिन एक कहावत है आँख फूटनी होती है तो घर के पाया से ही फूट जाती है। यह कहावत रहमान पर लागू होता है। खेत की रखवाली करते हुए जाड़े का अनुभव हुआ तो उसने तापने के लिए ईख के सूखे पत्ते को जला लिया। एक हवा का झोंखा आया और जलते पत्तों ने उड़ कर खेत में आग लगा दी। सब किए कराए पर पानी फिर गया गाँव वाले ने आग बुझाने की कोशिश भी की लेकिन असफल रहे दाऊ को जब पता चलता है तो रहमान को बुलाने के लिए लठैत भेजता है रहमान दैवी आफत सुनाता है कौड़ी-कौड़ी चुकाने (प्राकृतिक) का भरोसा देता है। किन्तु दाऊ दयालुता दिखाता है। और सारा कर्ज माफ कर देता है। रहमान कर्ज का बोझ लेकर मरना नहीं चाहता तब दाऊ समझाते है, तुमने

उस वक्त 5 रुपये का नुकसान उठाकर गाय मेरे हाथ बेचा था, वह शराफत मुझे याद है। उस एहसान को तो बदला चुकाना मेरी ~~ताकत~~ शक्ति से बाहर है। जब तुम इतने गरीब होकर एक गाय की जान 5 रुपये नुकसान उठा सकते हो तो मैं सौगुनी रखकर 4-5 सौ रुपये माफ नहीं कर सकता। तुमने भले ही जान कर मेरे ऊपर कोई एहसान न किया हो पर असल में मेरे धर्म पर एहसान था। मैंने भी तुम्हें धर्म के काम के लिए ही रुपये दिये थे हम दोनों का हिसाब बराबर हो गया। तुम्हारे दोनों बछड़े मेरे पास है। जो चाहे लो लेते जाओ तुम्हारी खेती में काम आएगे।

रहमान बोला, हुजूर को इस नेकी का बदला खुदा देगा। मैं तो आज से अपने को आपका गुलाम ही समझूंगा। दाऊ फिर नसीहत देते है। गुलाम छुटकारा पाने के लिए जो रुपये देता है उसे मुक्तिधन कहते है। तुम मुक्तिधन अदा कर चुके हो अब भूलकर भी यह शब्द मुंह से न निकालना। प्रेमचंद की यह कहानी आदर्शोन्मुखी है,

इसलिए इसे कल्पना की उड़ान कहा जा सकता है। यथार्थ से परे कि संज्ञा दी जा सकती है। लेकिन जो समाज को पढ़ना जानते हैं वे बखूबी जानते हैं कि समाज परस्पर सहयोग मैत्रीभाव और क्षमा के बिना गतिशील रह ही नहीं जा सकता।

Scanned with CamScanner